Date: 22 अप्रैल 2023

विश्व पृथ्वी दिवस 2023

संदर्भ- प्रत्येक वर्ष की तरह आज 22 अप्रैल को समस्त विश्व में पृथ्वी दिवस मनाया जा रहा है। यह दिवस समस्त विश्व में वर्ष 1970 से पर्यावरण की जागरुकता हेतु मनाया जाता है।

पृथ्वी दिवस का प्रारंभ –
पर्यावरण के प्रति जागरुकता से पूर्व अमेरिका में बड़े पैमाने पर ऑटोमोबाइल के द्वारा लैड युक्त गैस का उत्सर्जन हो रहा था। पर्यावरण में बाहरी कचरे की सफाई के लिए कार्यवाही की जा रही थी किंतु विषेली गैसों के पर्यावरण व मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव से अंमेरिकी अनभिग्य थे। 1962 में *राहेल कर्सन की पुस्तक साइलेंट स्प्रिंग* ने पर्यावरण, जीवित जीवों और मानव स्वास्थ्य के परस्पर संबंध को दृष्टिगोचर किया।
प्रारंभ में विकास का धुंआ समझे जाने वाले धुँए के पर्यावरणीय प्रभावों के बारे में समझ विकसित हुई। और अमेरिकी सीनेटर जेराल्ड हेल्सन ने 1970 में पर्यावरण संरक्षण के लिए इस दिवस की शुरुआत की थी। विश्वविद्यालय स्तर पर कार्य कर रहे अनेक संगठन जो तेल रिसाव, प्रदूषण जनित फेक्ट्रियाँ, ऊर्जा संयंत्र आदइ के कारण उत्पन्न हुए प्रदूषण को रोकने के लिए कार्य कर रहे विश्व के संगठनों को पृथ्वी दिवस के रूप में राष्ट्रीय मंच उपलब्ध हुआ।
पृथ्वी दिवस के प्रभाव के कारण कई पर्यावरण संबंधी कानून व संगठनों का निर्माण हुआ-

- संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण संरक्षण एजेंसी
- राष्ट्रीय पर्यावरणीय शिक्षा अधिनियम
- वायु अधिनियम
- स्वच्छ जल अधिनियम
- लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम
- संघीय कीटनाशक, कवकनाशक, रोडेंटिसाइड अधिनियम

अमेरिका में जनजागरुकता के बाद पहली बार वैश्विक स्तर पर पर्यावरण जागरुकता को प्रसारित करने के लिए 1990 में विश्व पृथ्वी दिवस मनाया गया जिसमें रिसाइक्लिंग को महत्व दिया गया। और **संयुक्त राष्ट्र पृथ्वी सम्मेलन 1992** की नींव रखी। आज यह 192 देशों में विश्व पृथ्वी दिवस के रूप में मनाया जा रहा है।

वर्तमान पृथ्वी दिवस का उद्देश्य 2020 में लगभग 50 वर्षों के लिए विश्व के लगभग 1 अरब लोगों को पृथ्वी संरक्षण के कार्यों के लिए एकत्रित करना है। जिसके तहत निम्न पर्यावरण से जुड़े मुद्दों के लिए निवेश करने का आग्रह किया जाता है-

पृथ्वी जलवायु साक्षरता- जलवायु संकट से निपटने और निम्न उद्देश्यों को पूर्ण करने हेतु बच्चों, युवाओं, वयस्कों, हेतु जलवायु साक्षरता का प्रबंध करने की आवश्यकता है, इन उद्देश्यों के लिए 4931 हस्ताक्षर हो चुके हैं।

- सतत विकास लक्ष्य 4- बेहतर स्वास्थ्य, गरीबी उन्मूलन, शांति और समृद्धि सुनिश्चित करना।
- सतत विकास लक्ष्य 13 – जलवायु परिवर्तन से होने वाले गंभीर परिणामों के लिए त्वरित कार्यवाही करना।
- पेरिस समझौता का एक्ट 12- जलवायु परिवर्तन से संबंधित शिक्षा, प्रशिक्षण, जन जागरूकता, सार्वजनिक भागीदारी और सूचना तक सार्वजनिक पहुंच को सुनिश्चित करना।

- मानव अधिकार की संयुक्त राष्ट्र घोषणा का अनुच्छेद 26- प्रत्येक व्यक्ति के लिए शिक्षा का अधिकार सुनिश्चित करना।
- यूनेस्को ईएसडी कार्यक्रम- यूनेस्को के कार्यक्रमों का प्रचार प्रसार करना और जनता की रुचि जागृत करना।

कैनोपी प्रोजैक्ट – पृथ्वी में बढ़ते प्रदूषण पर नियंत्रण करने के साथ उसकी भरपाई के रूप में वृक्षारोपण किया जा रहा है। इसके लिए कैनोपी प्रोजैक्ट की शुरुआत की गई है। 2010 से,पृथ्वी दिवस के मौके पर द कैनोपी प्रोजेक्ट के साथ लाखों पेड़ लगाए हैं। यह दुनिया भर में समुदायों को मजबूत करने के लिए काम कर रहे हैं। भारत में इस परियोजना के लिए **मैंग्रोव** को चुना गया है।

फैशन उद्योग को बदलना – पिछले 20 वर्ष में विश्व भर में 2.4 ट्रिलियन डॉलर के परिधान उद्योग विकसित हुए हैं, जो केवल एक बार उपयोग (फास्ट फैशन) पर आधारित होते हैं। इस प्रकार के वस्त्रों के कचरे का निपटान लैंडफिल या भस्मीकरण पद्धति पर किया जाता है। यह उद्योग सभी कार्बन उत्सर्जन के 10% के लिए जिम्मेदार है। कपड़ा प्रसंस्करण वैश्विक अपशिष्ट जल का 20% उपभोग करता है।यह नदियों, नालों और भूजल को उच्च स्तर के कीटनाशकों और कठोर रसायनों से प्रदूषित करता है, जिनमें से कई कार्सिनोजेनिक हैं। इस प्रकार के फैशन उद्योग को परिवर्तित करने के लिए प्रयास किए जाने हैं। जिसमें रिसाइक्लिंग और रियूज आधारित कपड़ो को ही महत्ता दी जानी चाहिए।

प्लास्टिक को समाप्त करना – पिछले 30 वर्षों में प्लास्टिक प्रदूषण में वृद्धि हुई है और अब यह एक वैश्विक समस्या का रूप धारण कर चुका है। प्लास्टिक के रिसाइकल पर अधिक बात की जाती है किंतु रिसाइकल की प्रोसैस में भी अत्यधिक कार्बन का उत्सर्जन होता है। विश्व में कुल प्लास्टिक का केवल 9% प्लास्टिक को ही रिसाइकल किया जा रहा है। प्लास्टिक के अत्यधिक दुष्प्रभावों के चलते इसके लिए कई सिफारिशें की जानी है जैसे- सिंगल यूज प्लास्टिक पर वैश्विक स्तर पर प्रतिबंध लगाना, प्लास्टिक को किसी भी पारिस्थितिकी तंत्र में जाने से पहले ही उसके नवाचार को प्रोत्साहन करना, आदि।

yojnaias.com

द ग्रेट ग्लोबल क्लीन अप – वैश्विक स्तर पर सफाई के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया जाता है जिसके तहत विश्व भर में लोग सफाई अभियान व कूड़े के निस्तारण के लिए स्वयं आगे आए। विश्व पृथ्वी दिवस के मौके पर लोग सफाई अभियान में भाग ले रहे हैं।
पृथ्वी में ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन के लिए भी एक पृथ्वी विधेयक लाने के भी प्रयास किए जाने हैं, जिसके लिए सभी देशों से समर्थन की मांग की जा रही है।

स्रोत
https://www.earthday.org/earth-day-2023/

Gunjan Joshi

C + C5 (चीन और मध्य एशिया) समूह

संदर्भ- हाल ही में, चीन ने C+C5 नामक समूह के व्यापार मंत्रियों की एक ऑनलाइन बैठक बुलाई । फरवरी 2022 में यूक्रेन पर रूसी आक्रमण के बाद से इस क्षेत्र के साथ बीजिंग द्वारा राजनयिक संबंधों की श्रृंखला में यह नवीनतम प्रयास था।

चीन और मध्य एशिया C + C5 समूह – चीन और पांच मध्य एशियाई गणराज्यों, अर्थात् उज़्बेकिस्तान, कजाकिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और किर्गिस्तान से मिलकर यह समूह बना है। चीन और मध्य एशिया के मध्य वर्तमान राजनीतिक संबंधों की शुरुआत **C + C5** समूह के गठन (वर्ष 1992) के बाद से ही हुई। इसके कुछ कारण हो सकते हैं-

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com

मध्य एशिया की संवेदनशील सीमाएं- संगठन मध्य एशियाई देशों की पड़ोसी सीमा के देशों में अराजकता की स्थिति थी। अफगानिस्तान में गृह युद्ध की स्थिति थी, तो भारत व पाकिस्तान परस्पर युद्धरत थे। शिनजियांग, स्वायत्तता को लेकर चीन में विद्रोही भूमिका में नजर आ रहा था।
मध्य एशिया में राजनीतिक अस्थिरता- मध्य एशिया की स्थिति तत्कालीन राजनीतिक अराजकता से भरी हुई थी। जातीय, सामुदायिक, कबीले, साम्प्रदायिक व क्षेत्रवाद की घटनाओ से सत्ता में स्थिरता लाना कठिन हो गया था।
शिनजियांग क्षेत्र की सुरक्षा की दृष्टि से- शिनजियांग, चीन का एक स्वायत्तशासी क्षेत्र है जो पड़ोसी देशों तिब्बत, भारत, मंगोलिया, अफगानिस्तान, पाकिस्तान व रूस के साथ ही **C5** के तीन देश कजाकिस्तान, किरगिजस्तान व तजाकिस्तान से सीमा सांझा करता है।
सोवियत संघ के पतन के कारण मध्य एशिया पर उसका आर्थिक प्रभाव कुछ कम हुआ इसके साथ ही चीन का मध्य एशिया पर प्रभाव दिखने लगा। चीन ने मध्य एशियाई देशों में बुनियादी संरचनाओं के लिए अतिरिक्त निवेश किया। जिस कारण चीन, सी फाइव देशों के लिए महत्वपूर्ण हो गया।
चीन के साथ व्यापारिक संबंध- चीन मध्य एशिया के साथ सैन्य प्रौद्योगिकी से संबंधित उपकरणों का द्विपक्षीय रूप से व्यापार करता है।

मध्य एशिया का महत्व

- चीन के लिए मध्य एशिया का ऐतिहासिक महत्व रहा है, चीन तथा पश्चिमी एशिया के साथ यूरोप तक व्यापारिक संबंध मध्य एशिया के द्वारा थल मार्ग से होते थे। मध्य एशिया के देश रेशम मार्ग की मुख्य कड़ी थे।
- मध्य एशिया, विश्व का प्रमुख खनिज उत्पादक देश है, जिसमें तेल, गैस, यूरेनियम, तांबा और सोना बहुतायत मात्रा में पाए जाते हैं।

C5 देशों के साथ चीन के संबंध-

उज्बेकिस्तान-

- उज्बेकिस्तान व चीन ने आर्थिक व व्यापारिक समझौता स्थापित किया है।
- उज्बेकिस्तान में बुनियादी सुविधा जैसे शिक्षा, व्यापार, रसद, आदि क्षेत्र, चीन के लिए महत्वपूर्ण निवेश वाले क्षेत्र हैं।
- 2021 में उज्बेकिस्तान में चीन का कुल निवेश 17.7 % रहा है।
- उज्बेकिस्तान गैस निर्यात का 50% केवल चीन को निर्यात करता है।

कजाकिस्तान-

- चीन कजाकिस्तान में 2005 से लगातार विभिन्न परियोजना के निवेश कर रहा है।
- कजाकिस्तान के तेल के कुल उत्पादन का 25% चीन को निर्यात करता है।
- कजाकिस्तान में विदेशी निवेश के लिए विरोध प्रदर्शन भी हो रहे हैं किंतु कजाख सरकार आर्तिक गठबंधनों के लिए प्रतिबद्ध है।

तजाकिस्तान-

- तजकिस्तान, सिल्क रोड बेल्ट परियोजना पर हस्ताक्षर करने वाला पहला मध्य एशियाई देश है। और यह चीन की परियोजना बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव का प्रबल समर्थक है।
- तजाकिस्तान में सर्वाधिक निवेश चीन द्वारा ही किया जाता है।
- चीन द्वारा तजाकिस्तान को अत्यधिक ऋण का भुगतान किया गया किंतु उसके स्थान पर तजाकिस्तान के महत्वपूर्ण खनिजों को प्राप्त किया। जिसके कारण पामीर क्षेत्र विवादित रहा है।

तुर्कमेनिस्तान-

- चीन 1992 से तुर्कमेनिस्तान का व्यापारिक भगीदार रहा है।
- चीन और तुर्कमेनिस्तान गैस व्यापार के लिए भागीदार हैं, इसके साथ ही चीन बीआरआई के तहत गैस पाइपलाइन को विकसित कर रही है।

Yojna IAS योजना है तो सफलता है yojnaias.com

किरगिजस्तान-

- चीन व किर्गिस्तान के मध्य राजनीतिक संबंध विवाद के साथ पिछले तीन दशकों से बने रहे हैं।
- चीन किर्गिस्तान उजबेकिस्तान रेलवे परियोजना, चीन के मध्य एशियाई देशों के खनिजों में पहुँच बढ़ाने के लिए निर्मित की गई है।
- इसके साथ किरगिजस्तान व CSTO सेन्य अभ्यास करने के लिए एकत्र होते हैं।

चीन मध्य एशिया में बुनियादी सुविधाओं में निवेश के साथ वहां के संसाधनों को अपने पक्ष करने के लिए देश को बाध्य करने की नीति पर कार्य कर रहा है। इसके साथ ही चीन के प्रभाव से रूस युक्रेन युद्ध में मध्य एशियाई देशों ने तटस्थ होना स्वीकार किया तथा किसी भी देश का साथ नहीं दिया। किंतु वे रूस के साथ व्यापार को भी बढ़ा रहे हैं। भारत और मध्य एशिया की व्यापार की भूस्थिति पाकिस्तान के समर्थन न मिलने के कारण कमजोर है किंतु इसे हवाई मार्ग के माध्यम से मजबूत बनाया जा सकता है।

स्रोत

Indian Express

https://www.icwa.in/

Gunjan Joshi

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com